क्रं०सं०	विषयः	लेखकः / लेखिका	पृ० सं०
	सम्पादकीयम्		
	संस्कृतखण्डः		
01.	कलाविलासे वेशयोषाणां चतुष्षष्टिकलाः	प्रो० बृजेशकुमारशुक्लः	01-04
02.	वैदिकवाङ्मये शिक्षादर्शनम्	प्रो० रामसुमेरयादवः	05-08
03.	पातञ्जलयोगसूत्रे तथा च गोरक्षशतके धारणाध्यानसमाधिः	डॉ० श्यामलेशकुमारतिवारी	09-11
04.	उपनिषत्सु आत्मज्ञानाधिकारी	डॉ० अशोककुमारशतपथी	12-14
05.	उपनिषत्स्वात्मास्वरूपम्	डॉ० सुधाशुक्ला	15-16
06.	नीतिवचोमण्डितं भागवतमीड्यताम्	डॉ० पवनकुमारः	17-18
07.	संस्कृतवाङ्मये सामाजिकजीवनस्य शाश्वतसिद्धान्ताः	डॉ० शालिनीशुक्ला	19-20
08.	वाल्मीकिरामायणे वात्सल्यरसस्य परिपोषः	डॉ० संयोगिता	21-23
09.	साम्प्रतिके काले वेदानां प्रासङ्गिकता	डॉ० उमानाथ द्विवेदी	24-26
10.	मनुस्मृतौ राजधर्मः साम्प्रतिक्युपयोगिता	श्री रोशन सिंह	27-28
11.	कालिदासीयं प्रकृतिचित्रणम् (अभिज्ञानशाकुन्तलस्य विशेषसन्दर्भः)	डॉ० भुवनेश्वरीभारद्वाज	29-30
12.	गृह्यसूत्रेषु सीमन्तोन्नयनम्	सुश्री दीप्तिसिंह	31-33
13.	जैनदर्शने वर्णितं परमात्मविचारः	डॉ० राकाजैन	34-36
	हिन्दीखण्डः		
14.	बौद्धशिक्षा की समसामयिकता	प्रो० अरूणा शुक्ला	37-38
15.	सैन्धव सभ्यता में प्रतिबिम्बित वैदिकसंस्कृति	डॉ० प्रयागनारायण मिश्र	39-42
16.	श्रीमद्भगवद्गीतोक्त कर्मयोग-एक अनुशीलन	डॉ० अभिमन्यु सिंह	43-45
17.	अथर्ववेदीय शालासूक्त में वर्णित गृहनिर्माण	डॉ० सत्यकेतु	46-48
18.	सौन्दर्यशास्त्र का स्वरूप	डॉ० बृजेश कुमार सोनकर	49-50
19.	काश्मीर शैवदर्शन में आत्मस्वरूप-निरूपण	डॉ० गौरव सिंह	51-52
20.	कादम्बरी के शुकनासोपदेश की प्रासङ्गिकता	डॉ० ऋचा पाण्डेय	53-55
21.	वाल्मीकि रामायण एवं महाभारत में पर्यावरण अवधारणा	डॉ० प्रेरणा माथुर	56-59
22.	अप्पय दीक्षित एवं पण्डितराज जगन्नाथ के विचारों में उत्प्रेक्षा अलङ्कार समीक्षण	डॉ० कुलदीपक शुक्ला	60-64
23.	उपनिषदों में वर्णित नैतिक मूल्यों की आज के सन्दर्भ में प्रासङ्गिकता	प्रो० सुधा बाजपेयी	65-68
24.	मानव जीवन में अध्यात्म का महत्त्व	प्रो० आनन्द कुमार श्रीवास्तव	69-71
25.	विश्वशान्ति में बौद्धधर्म दर्शन का योगदान	प्रो० विजय कुमार जैन	72-74
26.	अग्निपुराण में पर्यावरण विज्ञान	डॉ० सन्त प्रकाश तिवारी	75-78
27.	वक्रोक्तिजीवितम् में प्रतिपादित 'साहित्य' पद की मीमांसा	डॉ० जयप्रकाश नारायण	79-82
28.	प्रशान्तराघवम् नाटक में नवीन प्राकृत विम्ब	श्री धर्मेन्द्र कुमार	83-86
29.	आधुनिक युग में योग तत्त्वोपनिषद् का महत्त्व	श्री अनूप कुमार	87-91
30.	पातञ्जलयोगदर्शन की वर्तमान में प्रासङ्गिकता	श्री रामानन्द	92-94
31.	प्रो० मैक्समूलर की भारत एवं संस्कृत विषयक दृष्टि 'India what can it teach us' के आलोक में	डॉ० मैत्रेयी कुमारी	95-99
32.	वास्तुशास्त्र में नृपादिक गृहप्रमाण की व्यवहारिकता	डॉ० अनिल कुमार पोरवाल	100-103
33.	''रसप्रिया पेरिस राजधानी'' की समीक्षा	श्री राजेश कुमार	104-105
34.	समष्टिमङ्गल की स्थापना में वेद और कुम्भ की उपादेयता	डॉ० मनोरमा गुप्ता	106-108
35.	योगदर्शन के कर्मविपाक का स्वरूप और आधार	डॉ० करूणा आर्या	109-111
36.	भारतीय परम्परा में शाब्द-सौष्ठव की अवधारणा	डॉ० निरूपमा त्रिपाठी	112-114
37.	विविध विद्याओं की उपासना में अधिकारी विमर्श	डॉ० नेहा खरे	115-118
38.	महाराजा विक्रमादित्य के सभारत्नी कालिदास	डॉ० एच आर रैदास	119-123
39.	कालिदास की कृतियों में कर्त्तव्याधिकार का सन्तुलन	श्री योगेन्द्र कुमार सिंह	124-127
40.	आधुनिक संस्कृत काव्यों में निरूपित विदेशी छन्द	डॉ० अरूण कुमार निषाद	128-130
41.	डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री के काव्यों में विश्वबन्धुत्व का उद्घोष	सुश्री अमृता यादव	131-133

क्रं०सं०	विषयः	लेखकः / लेखिका	पृ० सं०
42.	संस्कृत महाकाव्यों में श्रीहरिसम्भवम् महाकाव्य का महत्त्व	सुश्री शिखा अग्निहोत्री	134–136
43.	रक्षतगङ्गाम् में भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण चिन्तन	श्री प्रेमपाल सिंह	137–139
44.	वेदों में राष्ट्रीय एकता विहङ्गावलोकन	डॉ० अरूणिमा	140–145
45.	प्राचीन बौद्ध विहारों में थेरवादी शिक्षा के अन्तर्गत निर्वाण का स्वरूप	डॉ० मीरा देवी	146–148
46.	आचार्य कौटिल्य के विद्या–विषयक विचार	डॉ० रीता तिवारी	149–152
	आङ्ग्लखण्डः		
47.	Spirituality-based Economic Development: Vedic Vision and Perception	Prof. Shashi Tiwari	153-157
48.	The Homeland and Movements of the Vedic Âryas in India: A New Geo-historical Perspective and Its Historical Significance	Prof. Shiva G Bajpai	158-160
49.	Veda : Platform for All Sciences	Prof. K K Misra	161-162
50.	VEDIC PHILOSOPHY OF LANGUAGE	Prof. Manoj Kumar Mishra	163-166
51.	CHANGING SOCIAL STRUCTURE AND AGED	Mr. Akhilesh Kumar Shukla	167-169
52.	BHAGVATAH SHIVASYA SVARUPAVIMARSHA	Dr. Mitali Deb	170-173